Dr. Jaya
Deptt. of Sociology

Date :- 25/07/2020

B.A Part I (Hons.)
Paper-2, Unit-4
Lecture Series :- 8th

Topic :- Social theory of Division of Labour

श्रम विभाजन की वृद्धि के लिए दुर्खीम ने जिन कारकों को महत्वपूर्ण माना है, इनके प्रभाव को निम्न रूप से समझा जा सकता है :-

आगे दिए गए चित्र से स्पष्ट होता है कि किसी सरल समाज में जब जनसंख्या में वृद्धि होती है, जनसंख्या का घनत्व बढ़ता है तथा संचार के साधनों का विकास होने लगता है तब वहाँ श्रम-विभाजन में भी वृद्धि होने लगती है। किसी समाज में जैसे-जैसे श्रम-विभाजन में वृद्धि होती है, वह समाज एक जटिल समाज का रूप लेने लगता है। श्रम विभाजन द्वारा किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाया जाता है, इसे समझने के लिए आवश्यक है कि निरन्तर विवेचन में श्रम-विभाजन की प्रक्रिया तथा इसके प्रभावों को समझा जाय।

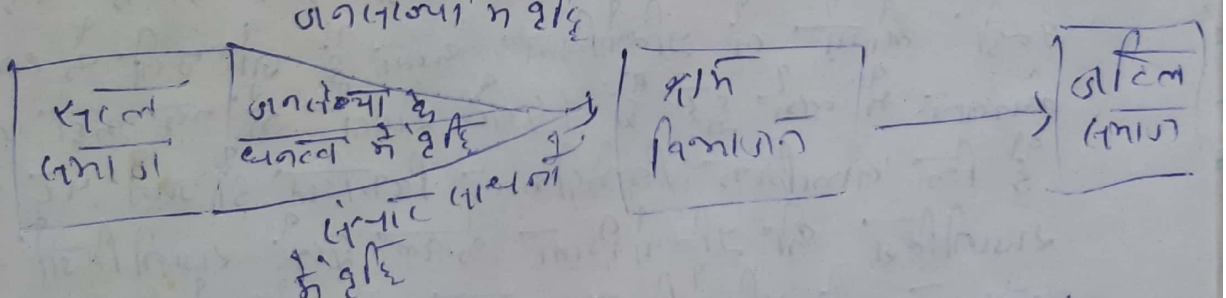

Process and Effect of Division of Labour

श्रम विभाजन की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए दुर्खीम ने बतलाया कि "श्रम-विभाजन समाज के आकार तथा

घनत्व के प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ता है एवं सामाजिक विकास की दशा में यदि इसमें निरंतर वृद्धि होती रहती है तो इसका तात्पर्य यही है कि उन समाजों के आकार तथा घनत्व में निश्चित रूप से वृद्धि हो रही है।" इस कथन से स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे समाज का आकार और जनसंख्या का घनत्व बढ़ता है, वैसे ही वैसे व्यक्तियों के बीच अधिक संपर्क स्थापित होने लगता है। जब अधिक व्यक्ति एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, तब इससे न केवल उनके बीच प्रतियोगिता बढ़ती है बल्कि अस्तित्व के लिए संघर्ष की दशा भी उत्पन्न हो जाती है। दुर्खीम ने सामाजिक गतिकता को महत्व देते हुए स्पष्ट किया है कि व्यक्ति संघर्ष से बचना चाहता है जिसके लिए वह एक शांतिपूर्ण रास्ता खोजने लगता है। इस शांतिपूर्ण खोज अथवा समाधान को ही दुर्खीम ने सामाजिक विभेदीकरण (social differentiation) के नाम से संबोधित किया।

सामाजिक विभेदीकरण एक ऐसा तरीका है जिसके अंतर्गत सभी व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न कार्य के आधार पर अनेक समूहों में विभाजित हो जाये। जब सामाजिक विभेदीकरण में वृद्धि होती है तब एक व्यक्ति की प्रतियोगिता समाज के सभी व्यक्तियों से नहीं होती बल्कि वह केवल उन्हीं लोगों से प्रतियोगिता करता है जो उसी के समान व्यवसाय में लगे हुए हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक विभेदीकरण विकसित हो जाने पर एक राजनीतिज्ञ की प्रतियोगिता केवल दूसरे राजनीतिज्ञों से, डॉक्टर की प्रतियोगिता अन्य डॉक्टरों से तथा व्यापारियों की प्रतियोगिता केवल व्यापार करने वाले व्यक्तियों से ही होगी। इस दशा में किसी लोहार की प्रतियोगिता डॉक्टर से अथवा डॉक्टर की प्रतियोगिता किसी जुलाहे से नहीं हो सकती। इस प्रकार दुर्खीम ने यह स्वीकार किया कि श्रम विभाजन अस्तित्व के लिए होने वाले संघर्ष